B.A.- Part-II
Paper - 1st

Dr. Mithilesh Kumar
Assistant Prof. History
J.M.S. College, Munger.

प्र०:→ मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोगों/प्रशासनिक योजनाओं का विवरण करें।

उत्तर:→ मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत का सबसे विद्वान व्यक्ति था। इसने अल-सुल्तान जिल्ली अल्लाह (ईश्वर सुल्तान का समर्थक है) की उपाधि धारण की। मुहम्मद बिन तुगलक के काल में दिल्ली सल्तनत का साम्राज्य सर्वाधिक विस्तृत था। वह अरबी एवं फारसी का महान विद्वान तथा ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं जैसे खगोलशास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा, विज्ञान, तर्कशास्त्र आदि विषयों में पारंगत था। मुहम्मद बिन तुगलक इतिहास में पागल, सनकी, रक्तपिपासु इत्यादि नामों से जाना जाता है।

1326-1337 ई० के बीच तुगलक ने कई प्रशासनिक प्रयोग किए। इन प्रयोगों का क्रम बरनी, फरिश्ता, इब्नबतूता, इसामी ने इस प्रकार बताया है -

1. राजधानी परिवर्तन।
2. दोआब में कर वृद्धि अथवा राजस्व सुधार।
3. खुरासान अभियान।
4. सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन।
5. कराचिल अभियान।

1. <u>राजधानी परिवर्तन</u>:→ मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद (देवगिरी) राजधानी बनाया। बरनी के अनुसार साम्राज्य के केन्द्र में होने के कारण दौलताबाद राजधानी बनाया। इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली के नागरिक अपमानपूर्ण सुल्तान तुगलक को पत्र लिखते थे। अतः उन्हें दण्ड देने के लिए उसने दौलताबाद राजधानी बनाने का निर्णय किया। डॉ० ए० एल० श्री वास्तव के अनुसार मंगोल आक्रमण से सुरक्षा, दक्षिणी भारत में दृढ़ व्यवस्था की आवश्यकता और दक्षिणी भारत का सम्पन्न होना इस राजधानी परिवर्तन के कारण थे।

तत्कालीन इतिहासकारों के अनुसार

Scanned with CamScanner

दिल्ली की सम्पूर्ण जनता को दौलताबाद जाने के आदेश दिये गये। मार्ग में सुल्तान ने जनता की सुविधा के लिए सभी सम्भव कार्य किए। दिल्ली से दौलताबाद तक की 700 मील लम्बी सड़क पर छायादार वृक्ष लगाये गये, प्रत्येक दो मील में जनता को रुकने और खाने पीने की व्यवस्था की गयी। सभी को यातायात सुलभ किया गया। सभी को अपने छोड़ी हुई सम्पत्ति का मुआवजा, दौलताबाद में मुफ्त रहने की और खाने की व्यवस्था की गई। परन्तु इन सभी सुविधाओं के होते हुए भी दिल्ली से दौलताबाद 40 दिन की यात्रा दिल्ली के नागरिक के लिए अत्यन्त कष्टदायक रही होगी इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता। बहुत सा जनता रास्ते में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। मुहम्मद बिन तुगलक की यह योजना असफल हुई। इतिहासकारों का मानना है कि सुल्तान का यह सोचना भी भूल था कि दौलताबाद एक उपयुक्त राजधानी होगी। मंगोलो के आक्रमणों से सुरक्षा तथा व्यवस्था के लिए दिल्ली अधिक उपयुक्त स्थान था।

(2) <u>दोआब में कर वृद्धि / राजस्व सुधार :-</u>

सर वुल्जले हेग ने लिखा है कि विस्तृत रूप से शासन की देखभाल करने में मुहम्मद तुगलक की तुलना स्पेन के शासक फिलिप द्वितीय से की जा सकती है। उसने राजस्व-व्यवस्था में सुधार करने के लिए अनेक कानून बनाये। उसने राजस्व-सुधार के लिए अनेक कानून बनाये। साम्राज्य के सभी प्रदेशों में एक समान लगान व्यवस्था लागू किया। अपने शासन-काल के आरंभ में सुल्तान ने दोआब में कर वृद्धि की। बरनी के कथनानुसार दस या बीस गुना कर दिया। लेकिन अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि दोआब क्षेत्र में भू-राजस्व कर को बढ़ाकर 50% कर दिया। इसी समय इस क्षेत्र के किसान अकाल

से पीड़ित हो गए, सूखा भी इस समय आया। लगान अधिकारियों ने बहुत कठोरता से कर वसूल किया जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न स्थानों पर विद्रोह हो गये। सुल्तान ने बड़ी कठोरता से विद्रोह को दबाया। इस विद्रोह को शांत करने के लिए तथा उत्पादन बढ़ाने के लिए तुगलक ने दीवान-ए-अमीर कोही (कृषि विभाग) स्थापित किया। मुहम्मद तुगलक ने अकाल सहायता के लिए अकाल-संहिता बनाई तथा कृषि आय का अलग रजिस्टर तैयार करवाया। यहीं से अकाल नीति प्रारंभ हुई।

इस सब के बावजूद किसानों का विद्रोह समाप्त नहीं हुआ। दूसरी तरफ अधिकारियों के भ्रष्टाचार के कारण यह योजना असफल हुई। डॉ० ए० एल० श्री वास्तव के अनुसार बाद में सुल्तान ने किसानों को बीज, बैल, सिंचाई के लिए कुँए और नहरें खुदवायी। परन्तु उससे कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि ये सहायता कार्य काफी देर से किये गये। सुल्तान को इस नीति से आय में कोई वृद्धि नहीं हुई और वह अपनी प्रजा में अत्यधिक बदनाम हुआ।

③ खुरासान अभियान :→

खुरासान अभियान (मंगोल क्षेत्र) का उद्देश्य ~~कि~~ था - ① मंगोल आक्रमण की समस्या का समाधान करना। ② साम्राज्य विस्तार के साथ-साथ राज्य की आय बढ़ाना। इस अभियान के लिये सुल्तान ने एक लाख से अधिक सैनिकों की भर्ती की, उन्हें प्रशिक्षण दिया तथा 1 साल का अग्रिम वेतन सैनिकों को दे दिया। खुरासान में परिस्थिति में परिवर्तन ~~के~~ हो गया। अतः सुल्तान ने खुरासान अभियान की योजना रद्द कर दिया। सुल्तान लम्बे अरसे तक इतनी बड़ी सेना का व्यय नहीं उठा सकता था। इस कारण इस योजना से हानि हुई। इससे सुल्तान

Scanned with CamScanner

की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। सेना से निकाले गए सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। इस योजना का मूल आधार भी दोषपूर्ण था। इतने दूरस्थ प्रदेश को जीतना सम्भव न था और यदि जीत भी लिया जाता तो उसे अपने अधिकार में रखना कठिन था।

(4) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन :→

इस योजना का उद्देश्य इस प्रकार था – वैश्विक स्तर पर चाँदी की कमी होने के कारण बाजार में चाँदी के मूल्य के बराबर ताँबे, कांस्य, अथवा पीतल के सिक्के जारी किये इसे ही सांकेतिक मुद्रा कहा जाता है। बरनी के अनुसार खजाने में धन की कमी और साम्राज्य विस्तार की नीति को कार्य-रूप में परिणत करने के कारण तुगलक को सांकेतिक मुद्रा चलानी पड़ी। ईरान तथा चीन में सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया था सम्भवतया नये-नये अन्वेषणों का प्रयोग करने वाला तुगलक ने उन देशों से प्रेरणा प्राप्त की।

परन्तु सुल्तान को यह योजना असफल हुई। प्रो मुहम्मद हबीब के अनुसार इस योजना की सफलता का दोष नागरिकों पर था जिन्होंने उन नवीन सिक्के के धातु को परखने का उसी प्रकार प्रयत्न नहीं किया जिस तरह से चाँदी और सोने के सिक्कों को परखते थे। इसके फलस्वरूप वे असली और नकली सिक्कों में अन्तर न कर सके। सुल्तान ने इस योजना को असफलता को देखकर सभी सांकेतिक मुद्रा को वापस ले लिया और व्यक्तियों को उनके बदले में चाँदी और सोने के सिक्के दे दिये। यह सुल्तान की बड़ी उदारता थी, लेकिन जनता व अधिकारियों के भ्रष्टाचार के कारण बाजार में नकली सिक्कों की बाढ़ आ गई। तथा यह योजना भी असफल साबित हुई।

Scanned with CamScanner

(5) कराचिल अभियान :-

इस अभियान का उद्देश्य कुमायूं क्षेत्र के छोटे-छोटे हिन्दू शासकों को सल्तनत में मिलाना था। यह क्षेत्र सल्तनत के विद्रोहियों के लिए शरणस्थली बना हुआ था। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर सुल्तान ने ख्वाजा मलिक खुसरो के नेतृत्व में एक बड़ी सेना भेजी। प्रारंभिक सफलता के बाद खुसरो सुल्तान की आज्ञा लिए बिना तिब्बत की ओर बढ़ गया, जहां रास्ता भटक जाने और स्थानीय आक्रमण के कारण संपूर्ण सेना नष्ट हो गई।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मुहम्मद बिन तुगलक अपनी सभी योजनाओं में असफल रहा। अतः हम यह सकते हैं कि उसके सुधार समय से बहुत आगे था। उसके प्रजा और अधिकारी उन योजनाओं को न समझ सके और न ही सहयोग किया। सुल्तान में कल्पना बुद्धि तो थी परन्तु व्यावहारिकता में कमी थी। इसकी मृत्यु पर बदायूंनी ने लिखा है - "सुल्तान को प्रजा और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिली।"

—x—

Scanned with CamScanner